CCRH Quarterly Bulletin
Vol. 17 (1 & 2) 1995

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद की गतिविधियाँ

आदिवासी क्षेत्रों में चिकित्सा अनुसंधान[1]

प्रस्तावना

आदिवासी लोग भारतीय सभ्यता के प्रमुख एवं एकीकृत अंग हैं। विश्व में अफ्रीका के उपरान्त भारत में सबसे अधिक आदिवासी जनसंख्या है। भारतीय जनसंख्या के ७ प्रतिशत लोग आदिवासी क्षेत्रों में रहते हैं। आदिवासी लोग भारत में सबसे प्रथम बसने वाले लोगों में से हैं एवं जिन्होंने भारत की संस्कृति, विभिन्नता एवं विरासत में काफी योगदान किया है।

भारतवर्ष में ४२५ आदिवासी कस्बे हैं। आदिवासी क्षेत्रों में विकास के लिये राज्यों एवं राष्ट्रीय स्तर की योजनाओं के साथ सामानान्तर प्रयास किये जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के २००० ई. तक सबको स्वास्थ्य लक्ष्य के लिए भारत दृढ़ संकल्प है। एक अच्छे जीवन के लिए स्वास्थ्य का होना एवं महसूस करना आधार भूत आवश्यकता है। भारत की ८० प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण अंचलों में निवास करती है जिसमें से काफी प्रतिशत आदिवासी पहाड़ों, रेगिस्तानों, आदिवासी क्षेत्रों में बसते हैं एवं जिनको स्वास्थ्य सम्बन्धी चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। यह लक्ष्य भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथिक सहयोग के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता।

यह परिषद देश के विभिन्न भागों में बसे आदिवासियों तक अनुसंधानों के निष्कर्मों के लाभ को पहुंचाने की आवश्यकता को समझती है और इसलिए परिषद् ने चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रमों को अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम के रूप में मुख्य रूप से आदिवासी क्षेत्रों में शुरू किया है। आदिवासी क्षेत्रों में चिकित्सा अनुसंधान १९८३-८४ में शुरू किया गया था और तब से अब तक देश के विभिन्न भागों में ऐसे स्थानों पर २२ अनुसंधान इकाईयों को स्थापित किया जा चुका है। इन इकाईयों से अपेक्षा है, अनुसंधान के माध्यम से आदिवासी लोगों तक चिकित्सा प्रदान करना एवं रोगों की उपस्थिति, खानपान के तौर तरीके, क्षेत्रीय परम्पराएं तथा विश्वासों से सम्बन्धित आंकड़ों को एकत्र करना।

अनुसंधान कार्यकर्ता द्वार-द्वार तक जाकर सर्वेक्षण करते हैं एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आंकड़ों को ग्रामीण इलाकों से एकत्र कर इस बात की जांच करते हैं कि किस रोग का प्रभाव क्षेत्र में अधिक है एवं चिकित्सा को पहुंचाते हैं।

वर्तमान में निम्नलिखित स्थानों पर इकाईयां स्थापित की जा चुकी हैं:-

जैपोर (उड़ीसा), डांडेली (कर्नाटक), कोहिमा (नागालैंड), भारूच (गुजरात), अगरतला (त्रिपुरा), इडुकी (केरल), एज्जावल (मिजोरम), सिलिगुड़ी (प. बंगाल), मनिपुर, डिफू (आसाम), मंगन (उत्तरी सिक्किम), विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश), गौंडा (उ.प्र.), पौंडिचेरी, शिलांग (मेघालय), रांची (बिहार), बस्तर (मध्य प्रदेश), इटानगर (अ.प्र.), सेलम (ता.नाडु), लेह (जे.के.), सम्बलपुर (उड़ीसा), एवं भारमौर (हि.प्र.)।

लगभग सभी आदिवासी इकाइयों ने क्षेत्रों का दौरा पूरा करके वहां पर सबसे प्रचलित रोगों का पता लगा लिया है। इन इकाइयों पर १९ औषधेन्मुखी कार्य प्रारम्भ किये गये हैं।

विभिन्न आदिवासी इकाइयों का विषयानुसार अनुसंधान का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है :

१. अमीबाएसिस

निम्नलिखित औषधियों का अमीबाएसिस रोग से चिकित्सीय मूल्यांकन —एल्स्टोनिया कंस्ट्रीक्टा, एम्ब्रोसिया, एस्क्लेपियास टयुब्रोसा, एटिस्टा इंन्डिका, एमिटाइन साएनोडोन डैक्टाईलोन, हेलीबोरस, होलेरहिना एण्टीडासैन्टेरिका, लैप्टेण्डरा, रेफनस, ट्रोम्बीडियम, जैन्थोजाईलम, जिंकम सल्फयुरिकम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान इकाई (आदि) डांडेली, दीमापुर, गौंडा, ईटानगर, जैपोर, चुराचांदपुर, मंगन तथा अगरतला में लिया गया है।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

उपचारित रोगियों की संख्या	५५६
लाभान्वित रोगियों की संख्या	३९१

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रम संख्या	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	साएनोडोन डेक्टाईलोन मदर टिंक्चर, ३ एक्स	१५९	११०
२.	एटिस्टा इंडिका मदर टिंक्चर, ३ एक्स	१०८	७५
३.	ट्रोम्बीड्रियम मदर टिंक्चर, ६	७४	६५
४.	एल्सटोनिया कंसट्रीक्टा मदर टिंक्चर, ३ एक्स	५९	२९

१. परिषद की १९९३-९४ के वार्षिक प्रतिवेदन से लिया गया है।

५.	एमिटाईन ३०	४९	३४
६.	फाईकस इंडिका मदर टिंक्चर, ३ एक्स	४३	२४
७.	एस्क्लेपियास टयुब्रोसा ३०	३२	१४
८.	लैप्टेण्डरा मदर टिंक्चर, ३ एक्स	१६	१४
९.	एम्ब्रोसिया ३०	७	७
१०.	होलेरहिना एण्टीडासैण्टेरिका मदर टिंक्चर, ६ ,३०	६	६
११.	जिन्कम एसल्फ. ३०	३	३

इनके अलावा हेलीबोरस मदर टिंक्चर, ६ एवं ३० , १२ रोगियों में प्रभावकारी पाई गई ।

प्रभावकारी पाई गई औषधि के लक्षण

(१) **साएनोडोन डक्टईलोन**

मल पतला, आंवयुक्त, दर्द के साथ (नाभि के नीचे), मल त्याग से पूर्व । कब्ज के साथ गुदा से रक्त स्राव एवं उदरवायु तथा निष्कासन से सुधार । भूख कम लगना, प्यास अधिक (अधिक मात्रा के लिये) पेट में मरोड़ जैसा दर्द, उदरवायु निष्कासन से सुधार ।

(२) **एटिस्टा इंडिका**

कब्ज या जलीय दस्त के साथ आंव एवं रक्त का आना । नाभि के क्षेत्र में शूल जैसा दर्द । मल पीला तथा मिट्टी जैसा ।

(३) **ट्रोम्बीडियम**

गुदा में जलन, भोजनोपरांत रोग वृद्धि । उदरशूल, मल त्याग से पूर्व एवं बाद में । पेट के उपरी बाजु हिस्सों में मरोड़ जैसा दर्द, प्रातः काल । मल भूरे रंग में, पतला रक्तयुक्त मरोड़ के साथ, भोजनोपरान्त ।

(४) **एल्सटोनिया कंस्ट्रीक्टा**

मल जलीय, पतला तथा पीलापन । वसायुक्त भोजन से रोग वृद्धि । मल के साथ सफेद आंव आना । भूख न लगना मितली एवं वमन ।

२. एटोपिक त्वाचाशोथ

निम्नलिखित औषधियों का एटोपिक त्वचाशोथ में चिकित्सीय मूल्यांकन—

एल्नस, एन्थराकोकिली, आर्ब्युटस एन्ड्राबने, आर्सनिक आयोडेटम, बर्बेरिस एक्वीफोलिया, युफोर्बियम, हाईग्रफिला स्पाईनोसा, आईडोथ्रीन, काली आर्सनिकम, मर्क्युरियस डलसिस, ओलिएन्डर, स्कूकमचक, स्ट्रीकननिम आर्सनिकम ।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) एज्जावल, जगदलपुर, भारमौर, गौंडा, ईटानगर, रांची, सेलम, सिलिगुड़ी तथा डिफू में चलाया जा रहा है ।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	७४३
लाभान्वित रोगियों की संख्या	७१३

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	एन्थराकोकिली ३०	१३०	११७
२.	बर्बेरिस एक्वीफोलियम ३०	१२३	११७
३.	हाइग्रोफिला स्पाईनोसा ३०	१०८	१०१
४.	काली आर्सनिकम ६ , ३०	७२	६४
५.	मर्क्युरियस डल्सिस ३०	६७	६७
६.	एल्नस मदर टिंक्चर, ६	६५	६०
७.	स्कूकमचक ३०	४१	४०
८.	आर्सनिक आयोडेटम ६	३३	१९

९.	ओलिएन्डर ६,३०	३०	२७
१०.	युफोर्बियम ३०	३	३

इनके अलावा ग्रेफाईटिस ३०,२०० (१६:१५),हिपर सल्फ ३० (१९:१८),नाईट्रिक एसिड ३० (१:१), सीपिया ३० (११:१०) और सल्फर ३० (२४:२३) प्रभावकारी पाई गई।

(पहला आंकड़ा उपचारित रोगियों की संख्या तथा दूसरा आंकड़ा लाभान्वित रोगियों की संख्या दर्शाता है)।

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(१) एन्थराकोकिली

पेप्यूलर उद्‌भेद,जिनमें वेसीकूलर बनने की प्रवृतता रहती है विशेषकर जननांओं,हाथों एवं पैरों के उदरी भाग में। अत्याधिक खुजली। सर्दऋतु में त्वचा में कटाव पैदा होना एवं गर्म पानी की सिकाई से सुधार होता है। खुजाने से उग्रता। सामान्यता,उद्‌भेद शुष्क,लाल,गोलाकार एवं दानेदार,प्रकार के होते हैं जिनमें खुजली होती है। मुहांसों में जलीय स्राव होता है,रात्रि एवं गर्माहट से रोगवृद्धि। खुजाने के उपरान्त जलन महसूस होना। आर्दऋतु में एग्जीमा उद्‌भेद उभरना।

(२) हाईग्रोफिला स्पाईनोसा

वृताकार,रक्तिम,दानेदार उद्‌भेद एवं खुजली,ग्रीष्म ऋतु में,उष्णता से गर्म पानी के सम्पर्क से एवं रात्रि में अधिक। खुजली में,ठंडे से स्नान तथा शीतलता से सुधार। जूलपित्तीय उद्‌भेदों में,मुहांसे लाल एवं खुजली के साथ।

(३) बर्बेरिस एक्वीफोलियम

पीठ तथा चेहरे पर रक्त,काले तथा लाल मुहांसे एवं उनमें खुजली,चेहरे पर चीटियां रेंगने जैसा महसूस होना। मुंहासों से रक्त,मवाद का स्राव होना। त्वचा में शुष्कता तथा खुरदरापन। मुख से अल्सर बनना। रात्रि में खुजली में वृद्धि तथा उष्णता से उग्रता। त्वचा शुष्क,खुरदरी तथा पपड़ी बनना। ग्रन्थियों में सूजन।

(४) एल्नस

सारे शरीर पर पेप्यूलर उद्‌भेद तथा खुजली,दाहिनी आंख के पास मुख के बाएं किनारे पर,बायीं बाजू कच्छ में तथा जंघाओं के बीच उद्‌भेद तथा जलीय एवं रक्तिम स्राव विशेषकर खुजाने के बाद। लक्षणों का ग्रीष्म तथा रात्रि में उग्रता। उंगलियों तथा हाथों में एग्जीमा बनना।

३. श्वसनी दमा

निम्नलिखित औषधियों का श्वसनी दमा रोग में चिकित्सीय मूल्यांकन—

एम्ब्रा ग्रिसिया,कैलेडियम,कैसिया सोफेरा,कोका,ग्रांडिल्या रोबस्टा,हाईड्रोसाएनिक एसिड,काली क्लोरिकम,मोस्कस,नाजा ट्रिप्युडियान्स,पोथोस फिटिडस।

इस अध्ययन को डन्डेली एवं लेह में लिया गया है।

१९९३-९४ की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	११४
लाभान्वित रोगियों की संख्या	१०६

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	ग्रांडिल्या मदर टिंक्चर,६,३०	३१	३०
२.	पोथोस मदर टिंक्चर,६,३०	२४	२०
३.	कोका मदर टिंक्चर,६,३०	१२	११
४.	नाजा ६,३०	११	९
५.	कैलेडियम मदर टिंक्चर,६,३०	१०	१०
६.	कैसिया सोफेरा मदर टिंक्चर ६,३०	९	९
७.	मोस्कम मदर टिंक्चर,६,३०	८	८
८.	एम्ब्राग्रिसिया ३०	७	७
९.	हाईड्रोसीएनिक एसिड ३०,२००	२	२

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(१) **ग्राईडिल्या**

छाती में दबाव तथा अत्याधिक व्हीजिंग एवं श्वासकृच्छता, बलगम, प्रचुरमात्रा में। श्वासकृच्छता, लेटने पर एवं सुधार बैठने से। बलगम झाग की तरह की एवं चिपचिपा।

(२) **पोथोस फिटिडस**

दमा, मलत्याग से सुधार, छाती में दद्र के साथ श्वासकृच्छता। जिव्हा में सुन्नपन।

(३) **कोका**

प्रवेगी दमा, रात्रि में श्वासकृच्छता। बोलने के बाद आवाज में भारीपन, धड़कन बढ़ना तथा श्वासकृच्छता सीढ़ियां चढ़ने पर। दमा के साथ धड़कन, श्वासकृच्छता, बेचैनी तथा उग्रता चलने पर।

(४) **नाजा ट्रिप्युडियांस**

छाती में बायीं ओर दर्द महसूस करना, बायीं ओर लेटने पर, शुष्क, खरखराहटपूर्ण खांसी। दमा जुकाम के साथ उग्रता उत्तेजक पदार्थों के सेवन से, सुधार खुली वायु में चलने पर। गले में अचानक रूकावट में श्वासकृच्छता।

(५) **कैलेडियम**

स्वरयंत्र में सिकुड़न, श्वासकृच्छता के साथ बलगम। श्वासकृच्छता, श्रम से पसीना आने से सुधार। स्रावी दमा, पसीना आने से सुधार। नींद में जाने से डरना।

४. श्वसनी शोथ

निम्नलिखित औषधियों का श्वसनी शोथ में चिकित्सीय मूल्यांकन—

एमोनिएकम डिरोनिया, एन्टीमोनियम आयोडिटम, युकैलिप्टस, जस्टीशिया एधाटोडा, काली आयोडेटम, लोबेलिया इन्फालाटा, लुर्फफा ओपर्कुलेटा, सेनेगा, सोलेनम एसिटिकम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) मंगन तथा जैपोर में लिया गया है।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	९९
लाभान्वित रोगियों की संख्या	९३

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधियों के नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	सेनेगा ३०	३०	२९
२.	लोबेलिया इन्फालाटा ६,३०	२४	२४
३.	एन्टीमोनियम आयोडेटम ३०	२८	२४
४.	जस्टीशिया एधाटोडा ३०	१४	१२
५.	काली आयोडेटम ३०	११	११
६.	एमोनिएकम डिरोनिया ३०	२	२

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(१) **सेनेगा**

चिरकारी श्वसनी शोथ तथा छाती में कसाव, दबाव तथा संकुचन। बलगम में कठिनाई। बलगम प्रचुर मात्रा में। श्वसनी स्राव तथा छाती में दाहता। पीठ में दर्द खांसने से, उग्रता चलने से, खुली वायु में। छाती में भारीपन जैसा महसूस होना। लगातार खांसी तथा बलगम मुश्किल से निकलना।

(२) **लोबेलिया इन्फलाटा**

श्वासकृच्छता तथा छाती में संकुचन उग्रता - श्रम से। लगातार खांसी उग्रता जरा सा हिलने डुलने पर। जरा सा काम करने पर ऐसा महसूस करना कि हृदय गति रूक जायेगी।

(३) एण्टीमोनियम आयोडेटम

चिरकारी श्वसनी शोथ कमजोरी तथा भूख न लगना। जुकाम का फेफड़ों तक विस्तार होना तथा श्वसनी शोथ में बदलना। सख्त, भोंकने जैसी खांसी तथा व्हीजिंग तथा बलगम का मुश्किल से निकलना। लगातार खांसी के साथ पीला बलगम, झाग जैसा तथा काफी खांसी करने के बाद निकलना। जिव्हा पर सफेद परत तथा प्यास। खांसी, उग्रता दिन में।

(४) जस्टीशिया एधाटोडा

श्वसन मंत्र में तीव्र स्रावी विकार। शुष्क खांसी प्रवेगी खांसी, आवाज में भारीपन, स्वरयंत्र में दर्द। खांसी एवं छींकों के साथ आवाज में भारीपन। तीव्र श्वासकृच्छता तथा छाती में कसाव। उष्ण कमरे में श्वासकृच्छता। खांसी के साथ बारबार एवं लगातार छींके आना। शुष्क खांसी एवं छाती में भारीपन।

५. गर्भाश्य ग्रीवा अपरदन एवं शोथ

निम्नलिखित औषधियों का गर्भाश्य ग्रीवा अपरदन एवं शोथ में चिकित्सीय मूल्यांकन—

एल्नस, आर्जेन्टम म्युरियाटिकम, औरम म्युरियाटिकम, कैल्था पैलूस्टरिस, फैगापाईरम, फलोरिकम एसिडम, हाईड्रास्टिस, हाईड्रोकोटाईल, थलैस्पाई बर्साप्रैस्टोरिस, उस्टिलेगो एवं वैस्पा क्रैब्रो।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ), चुराचांदपुर में लिया गया है।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	५५
लाभान्वित रोगियों की संख्या	५१

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	हाईड्रास्टिस ३०	२०	१७
२.	फैगोपाईरम ३०	१३	१२
३.	हाईड्राकोटाईल ३०	७	७
४.	उस्टिलेगो ३०	७	७
५.	थ्लैस्पाई बर्सा ३०, २००	२	२
६.	एसिड फलोर ३०, २००	२	२

इनके अलावा एल्सूपिना ३० एवं क्रीओजोट ३० प्रभावकारी पाई गई।

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(१) हाईड्रोस्टिस

श्वेत प्रदर, पीले रंग में उग्रता मासिक धर्म के उपरांत। स्राव, धागे में बन जाता है। योनिद्वार में खुजली। इन रोगों का जिगर के रोग के साथ होना।

(२) फैगोपाईरम

जननांगों में अत्याधिक खुजली। योनिद्वार में खुजली। पीला एवं प्रचुर मात्रा में श्वेत प्रदर। पेट के निचले भाग में दर्द एवं संवेदनशीलता। कमर के भाग में दर्द होना।

(३) हाईड्रोकोटाईल

श्वेतन प्रदर प्रचुर मात्रा में। योनिद्वार में खुजली, उग्रता रात्रि में। योनि में जलन महसूस करना। डिम्ब ग्रन्थियों में दर्द। चेहरे में बेचैनी जैसा भाव।

६. मधुमेह

निम्नलिखित औषधियों का मधुमेह रोग में चिकित्सीय मूल्यांकन—

एब्रोमा आगस्टा, सिफैलेण्डरा इंडिका, चिमाफिला अम्बेलेटा, ग्लिसराईनम, इन्सूलिन, इनूला, लेक डिफलेरेटम, लैक्टिक एसिड, साईजिजियम जैम्बोलेनम, थायरोएडिनम एवं युरेनियम नाईट्रिकम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान इकाई (आ) पांडिचेरी एवं विजयवाड़ा में लिया गया है।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	१८७
लाभान्वित रोगियों की संख्या	७०

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	सिफैलैण्डरा इंडिका ३०	८१	२५
२.	एब्रोमा आगस्टा ३०	४०	१६
३.	इंसूलिन ३ एक्स, ३०, २००, १ एम.	२७	८
४.	यूरेनियम नाईट्रिकम मदर टिंक्चर	२६	१३
५.	साईजिजियम जैमबोलेनम ३०	१३	८

अत्याधिक प्रभावकारी पाई गई औषधियों के लक्षण

(१) **सिफैलेण्डरा इंडिका**

मधुमेह के साथ उच्च रक्तचाप की स्थिति में अत्याधिक प्रभावकारी पाई गई। मुख में शुष्कता, अत्याधिक प्यास, मूत्र इच्छा बार-बार, पसीना प्रचूर मात्रा में आना एवं कमजोरी तथा चक्कर आना। हाथों एवं पैरों में चीटिंया रेंगने जैसा महसूस होना एवं सुन्नपन।

(२) **एब्रोमा आगस्टा**

अत्याधिक भूख, अत्याधिक प्यास एवं मूत्र त्याग प्रचूर मात्रा में। भूख में शुष्कता एवं प्यास लगना तथा मूत्र त्याग की इच्छा बार-बार। अत्याधिक कमजोरी, स्नायुविक दुर्बलता। मधुमेह के कारण नपुंसकता।

(३) **इंसूलिन**

मूत्र में ग्लूकोज का स्राव एवं त्वचा रोग। खुजली, त्वचाशोथ, कार्बन्कल, कमजोरी तथा मूत्र त्याग बार-बार होना। क्षीणता।

(४) **युरेनियम नाईट्रिकम**

मधुमेह एवं वृक्कशोथ। मधुमेह के साथ उच्च रक्तचाप। दुर्बलता एवं मांसपेशियों का कमजोर होना। वृक्कीय कारण से मूत्र में शूगर आना। अत्याधिक दर्द बदन में। बार-बार मूत्र त्याग कमजोरी एवं अत्याधिक प्यास। टांगों में सूजन। स्थूलता, मूत्र त्याग अत्याधिक मात्रा में यौन दुर्बलता।

(५) **साईजिजियम जैम्बोलेनम**

मूत्र त्याग प्रचुर मात्रा में, अत्याधिक प्यास, भूख, रक्त में शूगर की मात्रा अधिक। मूत्र में शूगर का स्तर उंचा। कमजोरी। अत्याधिक प्यास मधुमेह के कारण त्वचा में खुजली एवं अल्सर बनना। दुर्बलता।

७. पेचिश

पेचिश रोग में निम्नलिखित औषधियों का चिकित्सीय मूल्यांकन—

एल्सटोनिया कंस्ब्ट्रीक्टा, एम्ब्रोसिया, एस्कलेपियास टयुब्रोसा, एटिस्टा इंडिका, साएनोडोन डैटाईलोन, एमिटाईन, फाईकस इंडिका, लैप्टेण्डरा, सिल्फियम, ट्रोम्बीडियम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ) एज्जावल, भारूच, लेह, शिलांग एवं विजयवाड़ा में लिया गया है।

१९९३-९४ वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	३३०
लाभान्वित रोगियों की संख्या	२५९

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
१.	एल्सटोनिया कंस्ट्रीक्टा ६, ३०, २००	७१	५८
२.	एटिस्टा इंडिका मदर टिंक्चर, ३०, २००	५६	५०

३.	ट्रोम्बीडियम ६,३०,२०० १ एम.	४३	३१
४.	एमिटाईम ६,३०	२७	२०
५.	साएनोडोन डैक्टाईलोन ३०,२००	१८	११
६.	लैप्टेण्डरा ३०	१०	५
७.	एम्ब्रोसिया ३०	१०	४
८.	फाईकस इंडिका ३०	७	३
९.	एस्कलेपियास टयुब्रोसा ३०	४	३
१०.	सिलफियम ३०	३	१

इनके अलावा एलोज ३०,२००, कालचीकम ३०,२००, मर्क सोल ३०,२००, नक्स वोमिका ३०,२००, मर्क कौर ३०,२००, होलर्हिना एण्टीडायसैण्टेरिका ३०,२०० एवं एस्कूलस टयूब्रोसा ३०,२०० प्रभावकारी पाई गई।

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(१) एल्सटोनिया कंस्ट्रीक्टा

मल के साथ आंव, दिन में ४-५ बार, खाने के बाद उग्रता, भूख न लगना मुख में कड़वा स्वाद। पेट में दर्द,मल त्याग के उपरांत। मल में अपचित पदार्थ उदरवायु उग्रता रात्रि में, खाली पेट एवं सांयकाल।

(२) एटिस्टा इंडिका

मल पीला, पतला, आंवयुक्त तथा रक्त के साथ, दिन में ५-६ बार, उदरशूल के साथ, नाभिक्षेत्र में, मल त्याग से पूर्व एवं दौरान दर्द का बना रहना। मल त्याग के उपरांत पेट में दर्द होना। मरोड़ एवं उदरशूल जैसा दर्द। मल त्याग की इच्छा प्रातःकाल, भोजनोपरान्त। उदरवायु रात्रि में। डकारों से सुधर पेट में जलन। मितली भूख न लगना। प्यास अधिक तथा कमजोरी।

(३) ट्रोम्बीडियम

भूरा, पतला रक्त युक्त मल एवं दर्द, त्याग से पूर्व तथा बाद में उग्रता भोजनोपरान्त या पीने से। मल त्याग के उपरांत पेट में दर्द होना। मल दिन में ४-५ बार, पीला, पतला एवं आंवयुक्त। उदरवायु उग्रता। सांयकाल, खाली पेट एवं उदरवायु निष्कासन से सुधार।

(४) एमीटाईन

दस्त के साथ उदरशूल, दर्द एवं मितली, गोलकृमिया अधिक संख्या में निष्कासन। पेचिश का मितली एवं वमन के साथ।

(शेष अगले अंक में जारी)